छत्तीसगढ़ की प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी–चेतना का अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के
कला–संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में
पी–एच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत

रूपरेखा

2016–17

शोध–निर्देशक
डॉ. उर्मिला शुक्ला
सहा. प्राध्यापक
शास. ज.योगानंदम छत्तीसगढ़ महाविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)

सह–निर्देशक
डॉ. मधुलता बारा
सहा. प्राध्यापक
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)

शोध–छात्रा
अपर्णा सिंह

शोध–केंद्र

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

शीर्षक– छत्तीसगढ़ की प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी–चेतना का अध्ययन

प्रस्तावना

भारतीय स्त्री का स्वरूप आदरणीय रहा है। हिंदी कथा–साहित्य को समृद्ध बनाने में महिला कथाकारों की भूमिका को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता। मन्नू भण्डारी से लेकर महाश्वेता देवी तक फैला यह कथा–संसार पूरे भारत की विविधताओं को समेटकर आज इस मुकाम पर पहुँचा है कि विश्व की कथा–साहित्य से टक्कर ले रहा है।

इसे समृद्ध बनाने में छत्तीसगढ़ अंचल का योगदान उल्लेखनीय है। कहानी के प्रारंभिक काल से लेकर आधुनिक काल तक जब कहानी ने अपना एक विशेष मुकाम हासिल कर लिया है। इसमें छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों ने महती भूमिका निभाई है। बीसवीं सदी का चौथा चरण और इक्कीसवीं सदी की शुरूआत को अगर स्त्री–लेखन की संपूर्णता का काल कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हिंदी कथा–साहित्य में अनेक विविधताओं का पदार्पण हुआ है। ये विविधताएँ विषयवस्तु के स्तर पर और शिक्षा के स्तर पर भी दिखाई देती हैं। महिला कहानीकारों में श्रीमती संतोष झांझी, उर्मिला शुक्ल, जया जादवानी, सुभद्रा मिश्र, इंदिरा रॉय, कुंतल गोयल का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी रचनाओं में छत्तीसगढ़ अंचल की संस्कृति की झलक तो मिलती ही है, इस अंचल की समस्याएँ भी इनकी रचनाओं में उभरकर राष्ट्रीय फलक पर अपना मुकाम बनाती है। छत्तीसगढ़ की समाज व्यवस्था शेष भारत से बहुत अलग है। इसकी सामाजिक व्यवस्था में जनजाति समाज का खुलापन विद्यमान है।

पूर्व में किए गए शोध–कार्यों का पुनरावलोकन

संतोष झांझी, शुभदा मिश्र, स्व. कुंतल गोयल, इंदिरा राय तथा उर्मिला शुक्ल छत्तीसगढ़ की प्रतिष्ठित महिला साहित्यकार हैं। इस विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ की इन महिला कथाकारों की सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना पर पूर्व में कार्य इस दृष्टिकोण से नहीं किया गया है। यह साहित्य व समाज के लए अवश्य उपादेय सिद्ध होगा।

प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य

प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य यह है कि इस कार्य द्वारा लोगों में छत्तीसगढ़ की प्रस्तुत नारी–चेतना को हिंदी जगत में समझा जा सकेगा। कथा–साहित्य के क्षेत्र में पुरुष लेखकों का वर्चस्व लंबे समय से चला आ रहा था। अबला समझी जाने वाली महिलाएँ इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक काल में निर्भिकता एवं पूरे जोश के साथ लेखन के क्षेत्र में उठ खड़ी हुई हैं।

शोध का महत्व

स्त्री की अंतर्वेदना का यथार्थ चित्रण, आत्मभिमान, स्वयं को पहचानने का कठिन सफर, अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष इनकी प्रमुख विशेषता रही है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है कि यहाँ पुरुष जाति के लिए केवल घृणा है और नारी–जीवन के नकारात्मक पक्ष का ही वर्णन है। वास्तव में इनकी रचनाएँ स्त्री–जीवन के सार्थकता की खोज करती है, जिनमें कई प्रश्न ऐसे हैं जिन्हें केवल पुरुष को ही हल करना है, क्योंकि कहीं–न–कहीं ये समस्याएँ नारी के जीवन में पुरुष के सहचर्य ने पैदा की है।

प्रस्तावित शोध की प्रविधि

प्रस्तावित शोध में संतोष झांझी, उर्मिला शुक्ल, स्व. कुंतल गोयल, इंदिरा रॉय, सुभदा मिश्र के द्वारा लिखे गए लेखों के प्रकाशित संग्रहों का उपयोग किया जाएगा। संतोष झांझी, उर्मिला शुक्ल से साक्षात्कार किया जाना प्रस्तावित है। साथ ही उनके समकालीन साहित्यकारों व सहयोगिया से बातचीत करके वैज्ञानिक आधार पर

पड़ताल की जाएगी। इस हेतु संदर्भ–ग्रंथों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं आदि के माध्यम से प्रस्तावित विषय पर अध्ययन किया जाएगा। आधुनिक शोध–प्रणाली तथा ग्रंथालयों, समाचार–पत्रों एवं इंटनरेट का उपयोग कर कार्य को प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध के संभावित परिणाम

प्रस्तावित शोध–कार्य का संभावित परिणाम यह है कि जो शोध–कार्य किया जाएगा इसमें दिग्दर्शन होना सामाजिक परिवेश में स्त्रियों की स्थिति, जिसमें समाहित है– मानवीय–संवेदना, शारीरिक–मानसिक हिंसा, मुक्ति की छटपटाहट, रूढ़ियों–परम्पराओं में नारी, जिसके माध्यम से समाज को एक नई दिशा प्रदान की जा सकेगी।

उपसंहार

उपर्युक्त समस्त साहित्यकारों में वर्तमान समय की पीड़ा, वेदना, कुंठा, संत्रास अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष दृष्टिगोचर होता है। स्वयं के अस्तित्व, मान–सम्मान की तिलांजली देकर अपने–अपने परिवार की मान–मर्यादा का ध्यान रखती हैं। प्रत्येक विषय परिस्थितियों में भी अपने कदम पीछे नहीं खिंचती। इनकी कहानियों में बेबाकी है जो उमंगों और संजीदगियों में स्वयं को सतत देखती व माँजती हैं। अपने अस्तित्व के कोने–कोने से साक्षात्कार, प्रेम और समर्पण यहाँ मारक हो सकते हैं, आरक्षक नहीं।

शोध–प्रारूप

प्रस्तावना

- विषय–प्रवेश
- प्रस्तावित शोध–कार्य का संक्षिप्त पुनरावलोकन
- प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य
- शोध का महत्व

- प्रस्तावित शोध–प्रविधि
- शोध–कार्य के संभावित परिणाम
- अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय : छत्तीसगढ़ के समकालीन महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी–चेतना

1.1. प्रतिनिधि महिला कहानीकार

1.2. प्रमुख रचनाएँ

1.3. प्रतिनिधि महिला कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक–जीवन

द्वितीय अध्याय : प्रमुख महिला कहानीकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1. व्यक्तित्व

2.2. पारिवारिक जीवन

2.3. कृतित्व

तृतीय अध्याय : प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों में चित्रित नारी–जीवन

3.1. पारिवारिक–जीवन

3.2. सामाजिक–जीवन

3.3. आर्थिक–जीवन

चत्‌र्थ अध्याय : प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक–स्थितियाँ

4.1. उच्चवर्गीय सामाजिक–जीवन

4.2. मध्यमवर्गीय सामाजिक–जीवन

4.3. निम्नवर्गीय सामाजिक–जीवन

पंचम अध्याय : प्रमुख महिला कहानीकारों की कहानियों की भाषा–शैली का अध्ययन

5.1. भाषा

5.2. आंचलिक भाषा

5.3. शैली

षष्ठ अध्याय : प्रमुख महिला कहानीकारों का हिंदी कहानी को प्रदेय एवं उनका मूल्यांकन

परिशिष्ट : आधार–ग्रंथ

सहायक–ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ

वेबसाइट्स

साक्षात्कार (संतोष झांझी, सत्यभामा आड़िल, उर्मिला शुक्ल, कुंतल गोयल, सुभद्रा मिश्र व इंदिरा रॉय)

परिशिष्ट

आधार–ग्रंथ

1. गोयल, कुंतल. फूलों की गंध. इलाहाबाद : जैन पब्लिकेशन, अंबिकापुर, 1968.

2. गोयल, कुंतल. कुछ रेखाएँ कुछ चित्र. इलाहाबाद : जैन पब्लिकेशन, अंबिकापुर, 1968.

3. गोयल, कुंतल. ठहरे हुए अंधेरे. इलाहाबाद : जैन पब्लिकेशन, अंबिकापुर, 1968.

4. झांझी, संतोष. काथा नहीं. दुर्ग : श्री प्रकाशन, 2002.

5. झांझी, संतोष. आई लव यू. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2008.

6. मिश्र, शुभदा. मंथन. नई दिल्ली : समय प्रकाशन, 1998.

7. मिश्र, शुभदा. यहीं कहीं होगी संजीवनी. दिल्ली : समय प्रकाशन, 1998.

8. मिश्र, शुभदा. संदेशा इतना कहियो जाए. नई दिल्ली : समय प्रकाशन, 2016.

9. राय, इंदिरा. पल भर का सच. नई दिल्ली : समय प्रकाशन.

10. राय, इंदिरा. कैक्टस के फूल. नई दिल्ली : समय प्रकाशन.

11. राय, इंदिरा. बसेरा. रायपुर : राष्ट्रसेतु प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015.

12. शुक्ल, उर्मिला. छत्तीसगढ़ी संस्कृति और हिंदी का साहित्य. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2013.

सहायक–ग्रंथ

1. अरोड़ा, सुधा. आम औरत : ज़िंदा सवाल. नई दिल्ली : सामाजिक प्रकाशन, 2009.
2. आड़िल, सत्यभामा. छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य और नवजागरण. रायपुर : विकल्प प्रकाशन.
3. आड़िल, सत्यभामा. छत्तीगढ़ी भाषा और साहित्य. रायपुर : विकल्प प्रकाशन, 2006.
4. कालिया, ममता. कालिया की कहानियाँ. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, दरियागंज, प्रथम संस्करण 2005, द्वितीय संस्करण 2008.
5. चन्द्राकर, जयभारती. मानक छत्तीसगढो व्याकरण. रायपुर : शताक्षी प्रकाशन, 2006.
6. चन्द्राकर, जयभारती. छत्तीसगढ़ी गद्य–साहित्य में स्त्री–विमर्श. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2015.
7. चोपड़ा, सीमा. श्रेष्ठ महिलाओं एवं कथाकारों की प्रेरक कहानियाँ. इलाहाबाद : लीला प्रकाशन, 2012.
8. चौधरी, वनमाला. हिंदी कहानियों में नारी की समस्याएँ. नई दिल्ली : क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, प्रथम संस्करण 2008.
9. भाटिया, सुदर्शन. नारी–कर्त्तव्य एवं अधिकार. चण्डीगढ़ : तरलोचना पब्लिशर्स, 2011.
10. सिंघवी, कमला. स्त्री का आकाश. नई दिल्ली : सामाजिक प्रकाशन, 2008.
11. शर्मा, क्षमा. स्त्रीवादी विमर्श, समाज और साहित्य. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2010.

पत्र–पत्रिकाएँ

1. अन्यथा.
2. अहा ! ज़िंदगी.
3. अक्षर पर्व, 2008, 2009, 2001 मार्च तक सभी अंक.
4. इतवारी अखबार, रायपुर.
5. इंडिया टुडे, नई दिल्ली.
6. कहानीकार.
7. कथादेश.
8. जनसत्ता.
9. देशबंधु, अवकाश अंक 2008, 2009–10.
10. पाखी.
11. मीडिया विमर्श, नई दिल्ली.
12. वर्तमान साहित्य, 1992, 1993, 2002, 2004.
13. हंस.
14. संचेतना.
15. सारिका, 1989 समस्त अंक.
16. वेबसाइट्स.

शोध–निर्देशक
डॉ. (श्रीमती) उर्मिला शुक्ला
सहा. प्राध्यापक
शास. जे.योगानंदम छत्तीसगढ़ महाविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)

सहायक प्राध्यापक
शा. जे. यो. छत्तीसगढ़ महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

सह–निर्देशक
डॉ. मधुलता बारा
सहा. प्राध्यापक
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)

22/11/2016

शोध–छात्रा
अपर्णा सिंह

अध्यक्ष
शोध–केंद्र